नरेला रक्षाबंधन महोत्सव बना विश्व का सबसे बड़ा राखी महोत्सवः विश्वास सारंग

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का वह पावन पर्व है, जिसमें एक धागा रिश्ते की परिभाषा को रक्त संबंधों से आगे ले जाकर विश्वास, कर्तव्य, सुरक्षा, सम्मान और आत्मीयता से जोड़ देता है। कलाई पर बंधने वाला रक्षासूत्र आकार में भले ही छोटा हो, लेकिन उसके भीतर निहित भावनाएं अनंत होती हैं। यही कारण है कि हजारों वर्षों की यात्रा के बाद भी रक्षाबंधन आज भारतीय जनमानस में उतनी ही श्रद्धा और आत्मीयता के साथ जीवंत है।

सनातन संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यहां पर्व केवल उत्सव नहीं होते, वे जीवन दर्शन के वाहक होते हैं। प्रत्येक पर्व मनुष्य को स्वयं से, परिवार को समाज से और समाज को अपनी संस्कृति से जोड़ता है। रक्षाबंधन भी इसी महान परंपरा का पर्व है जो हमें याद दिलाता है कि रिश्ते अधिकार से नहीं, विश्वास और जिम्मेदारी से मजबूत होते हैं। इसी सांस्कृतिक और सामाजिक भावना को केंद्र में रखकर 18 वर्ष पूर्व नरेला में रक्षाबंधन महोत्सव प्रारंभ किया था। तब मेरा केवल एक ही उद्देश्य था कि हर बहन को यह विश्वास दिलाना कि मैं उनका भाई हूं, उनका रक्षक हूं और उनके जीवन में खुशियां लाने के लिए सदैव समर्पित रहूंगा।

आज वही भावना एक सामाजिक उत्सव का रूप ले चुकी है। हर वर्ष लाखों बहनें मुझे रक्षासूत्र बांधकर आशीर्वाद प्रदान करती हैं। पिछले वर्ष 1 लाख 84 हजार 632 बहनों ने रक्षासूत्र बांधकर अपना आशीर्वाद प्रदान किया। यह संख्या केवल एक रिकॉर्ड नहीं है। यह लाखों

बहनों के विश्वास, स्नेह और आत्मीयता की अभिव्यक्ति है। इसी अपार स्नेह ने नरेला रक्षाबंधन महोत्सव को विश्व के सबसे बड़े रक्षाबंधन महोत्सव के रूप में पहचान दिलाई है। लेकिन किसी भी आयोजन की वास्तविक सफलता उसके आकार से नहीं बल्कि समाज पर उसके प्रभाव से तय होती है। नरेला के इस महोत्सव की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि अब यह पर्व केवल नरेला परिवार तक सीमित नहीं रहा बल्कि भोपाल की अन्य विधानसभाओं की बहनें भी बड़ी संख्या में मुझे रक्षासूत्र बांधती हैं।

इस पर्व ने जनप्रतिनिधि और जनता के बीच औपचारिक संबंधों की सीमाओं को पार कर एक परिवार जैसा आत्मीय रिश्ता निर्मित किया है। जब कोई बहन राखी बांधती है, तो वह केवल एक धागा नहीं बांधती। वह अपने भाई की कलाई पर अपना विश्वास रखती है। वह यह उम्मीद रखती है कि आवश्यकता के समय उसका भाई उनके साथ है। हर राखी यह स्मरण कराती है कि सार्वजनिक जीवन में प्राप्त पद सम्मान का विषय हो सकता है, लेकिन उससे कहीं बड़ी चीज जनता का विश्वास है। यह विश्वास जितना बड़ा होता है, जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी होती जाती है। इस वर्ष भी विश्व का सबसे बड़ा नरेला रक्षाबंधन महोत्सव 31 अगस्त से प्रारंभ होने जा रहा है। जिसमें लाखों की संख्या में बहनें मुझे रक्षासूत्र बांधकर अपना अमूल्य आशीर्वाद प्रदान करेंगी। जब बहनें मुझे राखी बांधती हैं, तो मैं केवल एक जनप्रतिनिधि नहीं बल्कि उनके परिवार के एक सदस्य के रूप में उपस्थित होता हूं।

हर राखी मेरे कर्तव्यों की याद दिलाती है, हर मुस्कान मुझे प्रेरणा देती है और हर बहन की आँखों में विश्वास मुझे शक्ति देता है। आज नरेला विधानसभा की पहचान एक विधानसभा के रुप में नहीं बल्कि नरेला परिवार के रुप में है। यहां हर हिन्दू पर्व केवल परंपरा नहीं बल्कि उत्सव और उल्लास की जीवंत धारा बनकर बहता है। नरेला परिवार की हर बहन मेरी शक्ति है, मेरी प्रेरणा है और मेरी विजय का प्रतीक है। बहनों मैं यह वचन देता हूं कि जब तक मेरे जीवन में श्वास है, जब तक मेरे कर्म में शक्ति है, तब तक हर बहन की रक्षा, सम्मान, सशक्तिकरण और स्वाभिमान के लिए मैं सदैव समर्पित रहूंगा। मैं इस पवित्र पर्व पर एक बार फिर समस्त बहनों को नमन करता हूं और वचन देता हूं कि जब तक आपके भाई विश्वास की कलाई धड़कती रहेगी, तब तक हर बहन की मुस्कान मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता रहेगी। बहनों के विश्वास का यह पावन पर्व मेरे जीवन की अक्षय पूंजी है। बहनों आपका स्नेह, आशीर्वाद और अपनापन ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है। आपका स्नेह और आशीर्वाद सदैव बना रहे।

भारत की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा राष्ट्रवासियों के लिए गर्व का विषयः डॉ. यादव

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को उज़्बेकिस्तान के सर्वोच्च राजकीय सम्मान 'ओलि दराजली दोस्तलिक से सम्मानित किए जाने पर हर्ष व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री श्री मोदी को इस विशेष सम्मान के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'एक्स' पर अपनी पोस्ट में लिखा कि यह सम्मान भारत और उज़्बेकिस्तान राष्ट्रों के बीच परस्पर अटूट मित्रता, आपसी विश्वास और सांस्कृतिक साझेदारी का प्रतीक है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा और सुदृढ़ होते अंतर्राष्ट्रीय संबंध सभी राष्ट्रवासियों के लिए गर्व का विषय है।

आज से होगा नरेला रक्षाबंधन का शुभारंभ

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

सहकारिता, खेल और युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग के नेतृत्व में नरेला विधानसभा में विगत 18 वर्षों से लगातार विश्व का सबसे बड़ा नरेला रक्षाबंधन महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष यह आयोजन सोमवार 31 अगस्त को नरेला विधानसभा के वार्ड क्रमांक 44 में सुबह 11:00 बजे से भव्य शुभारंभ होने जा रहा है। पहले दिन का आयोजन नरेला विधानसभा के वार्ड क्रमांक 44, वार्ड क्रमांक 78 (दोप 02:00 बजे) एवं वार्ड क्रमांक 69 (शाम 04:00 बजे) में होगा। मंत्री सारंग ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी नरेला विधानसभा में रक्षाबंधन का त्यौहार बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस वर्ष भी नरेला रक्षाबंधन महोत्सव के लिये लाखों बहनों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया है। कार्यक्रम की सम्पूर्ण तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में नरेला विधानसभा व भोपाल के अन्य क्षेत्रों की महिलाएं मंत्री श्री सारंग के रक्षाबंधन महोत्सव में भाग लेकर उन्हें रक्षासूत्र बांधती हैं। इस बार भी नरेला विधानसभा के समस्त 17 वार्डों में भव्य आयोजन किये जा रहे हैं। मंत्री सारंग ने बताया कि महोत्सव के दौरान वातावरण ऐसा निर्मित किया जायेगा कि बहनों को अपने मायके का अहसास हो। इसके लिये रक्षाबंधन महोत्सव के दौरान बहनों के मनोरंजन के लिये सावन के गीतों का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि बहनों व भांजे-भांजियों के लिए झूले भी लगेगें। वहीं बहनों को मेंहदी लगाने और चूड़ियां पहनाने के लिए स्टॉल भी लगाये जायेंगे। पिछले वर्ष आयोजित हुए रक्षाबंधन महोत्सव में रिकॉर्ड 1 लाख 84 हजार 632 बहनों ने मंत्री श्री सारंग को रक्षासूत्र बांधे थे। हर वर्ष यह संख्या बढ़ती जा रही है। वहीं इस वर्ष भी लाखों की संख्या में महिलाओं के रक्षाबंधन महोत्सव में सम्मिलित होने की संभावना जताई जा रही है।

इस वर्ष भी लाखों बहनें मंत्री सारंग को बांधेंगी रक्षासूत्र

ग्वालियर और चंबल संभाग में पहली बार किसी शासकीय अस्पताल में हुआ किडनी ट्रांसप्लांट

गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर में अत्याधुनिक अंग प्रत्यारोपण सुविधा से ग्वालियर-चंबल क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं को मिली नई मजबूती

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

प्रदेश के सभी अंचलों में उच्चस्तरीय और अत्याधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए राज्य शासन निरंतर प्रयासरत है। इसी दिशा में ग्वालियर के गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय से संबद्ध सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में ग्वालियर और चंबल संभाग के किसी शासकीय चिकित्सीय संस्थान में पहली बार किडनी ट्रांसप्लांट की सफल प्रक्रिया पूरी होना महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने इस उपलब्धि पर गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय, सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल की पूरी चिकित्सा टीम और विशेषज्ञों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि शासकीय स्वास्थ्य संस्थानों में जटिल और अत्याधुनिक उपचार सुविधाओं का विस्तार सरकार की प्राथमिकता है।

अंग प्रत्यारोपण जैसी आधुनिक चिकित्सा सुविधा का ग्वालियर में शुरू होना इस बात का प्रमाण है कि प्रदेश के बड़े शहरों के साथ-साथ विभिन्न अंचलों में भी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को लगातार मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस सुविधा का लाभ क्षेत्र के जरूरतमंद मरीजों को मिलेगा और आयुष्मान योजना के माध्यम से निःशुल्क उपचार उपलब्ध होना सरकार की जनकल्याणकारी प्रतिबद्धता को भी मजबूत करता है। ग्वालियर के सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में ट्रांसप्लांट के बाद

मरीज और डोनर दोनों की हालत स्थिर है और चिकित्सकों की टीम लगातार उनकी निगरानी कर रही है। छतरपुर निवासी कृष्णकांत गुप्ता (60 वर्ष) की दोनों किडनियां खराब हो गई थीं। परिवार की सहमति के बाद उनकी पत्नी श्रीमती मीना गुप्ता (55 वर्ष) ने पति को किडनी दान करने की इच्छा जताई। इसके बाद मरीज और डोनर की आवश्यक मेडिकल जांच, काउंसलिंग, अनुकूलता परीक्षण तथा ट्रांसप्लांट से संबंधित अन्य जरूरी प्रक्रियाएं पूरी की गईं। सभी आवश्यक प्रक्रियाएं पूर्ण होने के बाद मरीज और डोनर को 29 अगस्त को सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में भर्ती किया गया। रविवार सुबह करीब 8:30 बजे किडनी ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया शुरू हुई। सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के नेफ्रोलॉजी, एनेस्थीसिया और यूरोलॉजी विभाग के नेतृत्व में मणिपाल हॉस्पिटल के यूरोलॉजी एवं किडनी ट्रांसप्लांट विभागाध्यक्ष डॉ. विकास जैन के सहयोग से विशेषज्ञों की टीम ने पूरी प्रक्रिया को पूर्ण किया। करीब साढ़े छह घंटे चली जटिल प्रक्रिया दोपहर लगभग 3 बजे पूरी हुई। ट्रांसप्लांट के दौरान मरीज और डोनर की स्थिति पर विशेषज्ञों ने लगातार नजर रखी। अस्पताल प्रबंधन के अनुसार पूरी प्रक्रिया निर्धारित प्रोटोकॉल के तहत की गई और किसी प्रकार की बड़ी समस्या सामने नहीं आई। गुप्ता का किडनी ट्रांसप्लांट आयुष्मान योजना के तहत निःशुल्क किया गया। इससे आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों के लिए भी शासकीय अस्पताल में अत्याधुनिक अंग प्रत्यारोपण की सुविधा उपलब्ध होने का मार्ग मजबूत हुआ है। परिजनों ने अस्पताल की पूरी टीम और शासन की स्वास्थ्य योजनाओं के प्रति आभार जताया। ट्रांसप्लांट के बाद मरीज को संक्रमण से बचाना सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में मरीज के लिए अलग से आईसीयू की व्यवस्था की गई है। अस्पताल में सेंट्रलाइज्ड एसी सिस्टम होने के बावजूद ट्रांसप्लांट मरीज के आईसीयू में अलग से एसी की व्यवस्था की गई है, ताकि संक्रमण का खतरा न्यूनतम रखा जा सके।

मरीज के कक्ष में डॉक्टरों और अधिकृत चिकित्सा स्टाफ के अलावा अन्य किसी व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। मरीज को सात दिन तक मेडिसिन, नेफ्रोलॉजी और एनेस्थीसिया विभाग के चिकित्सकों की विशेष निगरानी में रखा जाएगा। इसके लिए चिकित्सकों की राउंड-द-क्लॉक ड्यूटी लगाई गई है। किडनी ट्रांसप्लांट को सफल बनाने में डॉ. नीलिमा टंडन, डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, डॉ. शिवम यादव, डॉ. अंकित शर्मा, डॉ. सीमा शिंदे, डॉ. जिंदल, डॉ. नम्रता जैन, डॉ. कुशल, ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेटर कविता और राहुल सहित पूरी चिकित्सा टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

परिजनों ने जताया आभार

कृष्णकांत गुप्ता के बेटे सुमित कनकने ने बताया कि ट्रांसप्लांट के दौरान किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं आई। उन्होंने बताया कि पूरा ऑपरेशन आयुष्मान योजना के तहत हुआ है। सुमित ने महाविद्यालय अधिष्ठाता प्रो. डॉ. आर.के.एस. धाकड़, डॉ. शिवम यादव और डॉ. अंकित शर्मा का आभार जताते हुए कहा कि उनके अथक प्रयासों से ही ग्वालियर में यह ट्रांसप्लांट संभव हो सका। महाविद्यालय अधिष्ठाता प्रो. डॉ. आर.के.एस. धाकड़ ने कहा कि सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में पहला किडनी ट्रांसप्लांट होना गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय और पूरे ग्वालियर और चंबल क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। ट्रांसप्लांट प्रक्रिया में शामिल मणिपाल हॉस्पिटल के डॉ. विकास जैन ने कहा कि वे अपनी टीम के साथ दिल्ली से यहां आए और पूरी प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया। सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के स्टाफ की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि कार्य के दौरान उन्हें ऐसा महसूस नहीं हुआ कि वे किसी नए सेटअप में पहली बार काम कर रहे हैं।

प्रमुख सचिव ऊर्जा ने किया एमपी ट्रांसको के 220 केवी सब स्टेशन रोंसरा का निरीक्षण

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

मुख्यमंत्री जन विश्वास अभियान के अंतर्गत प्रमुख सचिव ऊर्जा मनीष सिंह ने नरसिंहपुर जिले के भ्रमण के दौरान मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) के 220/132/33 केवी अति उच्च दाब सबस्टेशन रोंसरा,नरसिंहपुर का निरीक्षण किया। उन्होंने सब स्टेशन की व्यवस्थाओं, विद्युत आपूर्ति की स्थिति तथा संचालित कार्यों की जानकारी लेकर एम पी ट्रांसको के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान प्रमुख सचिव ऊर्जा सिंह ने सब स्टेशन की आपरेशन एवं मेंटेनेंस गतिविधियों तथा विद्युत आपूर्ति की विश्वसनीयता का जायजा लिया। उन्होंने उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों की सराहना करते हुए विद्युत कार्यों के दौरान सुरक्षा मानकों का शत-प्रतिशत पालन सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया।

नरसिंहपुर बाईपास निर्माण के कारण 220 केवी सब स्टेशन रोंसरा के पहुंच मार्ग में उत्पन्न हुई समस्याओं पर प्रमुख सचिव ऊर्जा ने चिंता व्यक्त की। उन्होंने मुख्य अभियंता (टेस्टिंग) एम.वाय. मंसूरी से चर्चा करते हुए कहा कि यदि वर्तमान में सबस्टेशन तक सामान्य वाहनों की पहुंच में कठिनाई हो रही है, तो किसी आकस्मिक स्थिति में बड़े पॉवर ट्रांसफार्मर एवं अन्य भारी उपकरणों की आवाजाही भी प्रभावित हो सकती है। उन्होंने स्थानीय प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर समीपस्थ नाले पर निर्मित पुल के पुनर्निर्माण की दिशा में आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। साथ ही सब स्टेशन की एप्रोच रोड के शीघ्र सुधार के भी निर्देश दिए।

प्रमुख सचिव ऊर्जा ने जबलपुर एवं पिपरिया के मध्य स्थित इस महत्वपूर्ण सब स्टेशन के लोड प्रबंधन एवं वोल्टेज प्रोफाइल की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी रबी सीजन को ध्यान में रखते हुए किसानों को गुणवत्तापूर्ण एवं निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अभी से आवश्यक तैयारियां पूरी की जाएं ।

रक्षाबंधन के अवसर पर प्रदेश की जेलों में भावनात्मक माहौल

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

मध्यप्रदेश जेल प्रशासन के आदेशानुसार जेल महानिदेशक डॉ. वरुण कपूर के मार्गदर्शन में रक्षाबंधन के पावन अवसर पर प्रदेश की विभिन्न जेलों में निरुद्ध लगभग 45000 बंदियों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए, जेलों में अधिकारी एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में कड़ी सुरक्षा एवं निगरानी के बीच खुली मुलाकात (जेल के अंदर रिक्त स्थान या खुले मैदान में बंदी के परिजनों को जेल गेट के अंदर लेकर करवाई जाने वाली मुलाकात) का विशेष आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में बहनें अपने भाइयों से मिलने जेल पहुंचीं और उन्होंने भाइयों की कलाई पर पवित्र राखी बांधकर उनके स्वस्थ, सुखी एवं

उज्ज्वल भविष्य की कामना की। वहीं दूसरी तरफ जेलों में निरुद्ध महिला बंदी बहनों से मिलने उनके भाई एवं परिजन पहुंचे। लंबे समय बाद अपने बच्चों (10 वर्ष तक के) एवं परिजनों से मिलकर बंदी भाई-बहनों के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे साथ ही लम्बे समय से उनसे जुदाई के कारण आंखों में आनंद के अश्रु दिखाई दिए। इस दौरान जेलों में भाई-बहन के आत्मिक प्रेम और स्नेह के भावुक कर देने वाले दृश्य देखने को मिले। प्रदेश की जेलों में आयोजित खुली मुलाकात के लिए जेल प्रशासन द्वारा बंदियों एवं उनके परिजनों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, आवश्यक व्यवस्थाएं की गई थीं। खुली मुलाकात के दौरान सुरक्षा मानकों का पूर्ण पालन करते हुए, जेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सतत निगरानी रखी गई तथा संपूर्ण सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ मुलाकात के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। इस विशेष आयोजन के शुभ अवसर पर महानिदेशक जेल, डॉ. वरुण कपूर स्वयं केन्द्रीय जेल इंदौर में उपस्थित रहे, जहां उनके द्वारा सभी बंदियों एवं उनके परिजनों को शुभकामनाएं एवं बधाइयां प्रेषित कीं गईं।

सागर पुलिस की गुम/अपहृत बालक-बालिकाओं की दस्तयाबी में उल्लेखनीय उपलब्धि

9 वर्ष पुराने प्रकरण में भी अपहृता को सकुशल दस्तयाब कर परिवार से मिलाया

आधुनिक तकनीक, साइबर विश्लेषण और मैदानी पुलिसिंग के समन्वय से मिली सफलता

गुजरात एवं महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों तक पहुंचीं पुलिस टीमें

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा नाबालिग बालक-बालिकाओं की गुमशुदगी एवं अपहरण के प्रकरणों में संवेदनशीलता, तत्परता और आधुनिक तकनीक के समन्वय से लगातार प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में सागर पुलिस ने वर्षों से लंबित अपहरण के 22 प्रकरणों में गुम/अपहृत बालक-बालिकाओं को सकुशल दस्तयाब कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इन प्रकरणों में पुलिस टीमें मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ-साथ गुजरात एवं महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों तक पहुंचीं और लंबे समय से अपने बच्चों की प्रतीक्षा कर रहे परिवारों को राहत प्रदान की। पुलिस अधीक्षक सागर अनुराग सुजानिया के निर्देशन में जिले में लंबे समय से लंबित अपहरण प्रकरणों की विशेष समीक्षा कर प्रत्येक प्रकरण के लिए सुनियोजित कार्ययोजना तैयार की गई। पुलिस अधीक्षक द्वारा चिन्हित प्रकरणों में विशेष पुलिस टीमों का गठन कर उन्हें अलग-अलग टास्क सौंपे गए।

पुलिस टीमों ने परिचितों से प्राप्त जानकारी सहित अन्य तकनीकी साक्ष्यों का विश्लेषण किया। तकनीकी विश्लेषण से प्राप्त संभावित स्थानों एवं सुरागों के आधार पर पुलिस टीमों ने मैदानी स्तर पर कार्रवाई करते हुए संबंधित स्थानों पर पहुंचकर दस्तयाबी की कार्रवाई की। थाना भानगढ़ में एक अपहृता के घर से स्कूल जाने के बाद वापस नहीं लौटने पर प्रकरण दर्ज किया गया था। लगभग 9 वर्षों से लंबित इस प्रकरण में पुलिस द्वारा अपहृता से संबंधित नवीनतम आधार कार्ड एवं अन्य व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त कर तकनीकी विश्लेषण के दौरान अपहृता के नवीनतम पते की जानकारी प्राप्त कर सकुशल दस्तयाब किया। लगभग नौ वर्ष बाद अपनी बेटी को सकुशल सामने देखकर परिजनों की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े। थाना रहली में दर्ज अपराध में तकनीकी विश्लेषण कर लोकेशन के आधार पर अपहृता की उपस्थिति सूरत, गुजरात में होना पाया गया। पुलिस टीम द्वारा तत्काल कार्रवाई करते हुए सूरत पहुंचकर अपहृता को सकुशल दस्तयाब किया गया। थाना बीना में दर्ज अपराध के तहत को पुलिस द्वारा अपहृता के परिजनों से लगातार समन्वय स्थापित कर उपलब्ध जानकारी का संकलन किया गया। प्राप्त महत्वपूर्ण सुरागों के आधार पर तलाश को आगे बढ़ाया गया और अपहृता को सकुशल दस्तयाब किया। स्कूल जाने की बात कहकर घर से निकली अपहृता के वापस नहीं लौटने पर थाना केसली में प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। पुलिस द्वारा प्रकरण में संदेही के परिजनों से लगातार समन्वय स्थापित कर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गई।

प्राप्त सुरागों के आधार पर पुलिस टीम द्वारा नलवाड़ी, महाराष्ट्र पहुंचकर अपहृता को सकुशल दस्तयाब किया गया। इसी प्रकार एक अन्य प्रकरण में थाना केसली में घर से बिना बताए चले जाने के बाद वापस नहीं आने पर प्रकरण दर्ज किया गया था। पुलिस द्वारा अपहृता की बहन से लगातार समन्वय स्थापित कर उसकी संभावित उपस्थिति के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर चिंचवाड़ा, महाराष्ट्र से दस्तयाब किया। सागर पुलिस की इस विशेष कार्ययोजना के अंतर्गत कुल 22 लंबित प्रकरणों में गुम/अपहृत बालक-बालिकाओं की दस्तयाबी की गई। इनमें ऐसे प्रकरण भी शामिल हैं, जो लंबे समय से लंबित थे और जिनमें परिजन वर्षों से अपने बच्चों की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इन प्रकरणों में पुलिस ने परिजनों से निरंतर संपर्क, व्यक्तिगत जानकारी का अद्यतन संकलन, साइबर तकनीक का उपयोग और मैदानी पुलिसिंग को एक साथ जोड़कर बालिकाओं की दस्तयाबी सुनिश्चित की। इस समन्वित प्रयास का परिणाम रहा कि लंबे समय से लंबित मामलों में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई और अनेक परिवारों के चेहरों पर वर्षों बाद खुशी लौटी। सागर पुलिस की यह कार्रवाई दर्शाती है कि पुराने एवं लंबित प्रकरणों में भी यदि सुनियोजित समीक्षा, आधुनिक तकनीक, साइबर विश्लेषण, उपलब्ध व्यक्तिगत जानकारी के अद्यतन संकलन और निरंतर मैदानी प्रयास किए जाएं, तो लंबे समय बाद भी महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है। मध्यप्रदेश पुलिस नाबालिग बालक-बालिकाओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गुमशुदगी एवं अपहरण के प्रत्येक प्रकरण में त्वरित, संवेदनशील एवं प्रभावी कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध है। मध्यप्रदेश पुलिस अपील करती है कियदि कोई बालक या बालिका गुम होता है तो परिजन बिना किसी देरी के तत्काल नजदीकी पुलिस थाना अथवा पुलिस को सूचना दें। समय पर प्राप्त सूचना पुलिस को त्वरित कार्रवाई करने तथा बच्चे को जल्द से जल्द सुरक्षित दस्तयाब करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करती है।

पेंशन फाइल रोकना पड़ेगा भारी हर स्तर पर तय हुई डेडलाइन

पीपुल्स प्रवक्ता, भोपाल।

प्रदेश में सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के पेंशन प्रकरणों के निराकरण में होने वाली देरी अब अधिकारियों-कर्मचारियों को भारी पड़ सकती है। वित्त विभाग ने राज्य केन्द्रीयकृत पेंशन प्रोसेसिंग सेल के तहत ऑनलाइन पेंशन प्रकरणों के निराकरण के लिए प्रत्येक स्तर पर अधिकतम समय-सीमा तय कर दी है। निर्धारित समय में प्रकरण का निराकरण नहीं होने पर संबंधित स्तर की जवाबदेही तय की जाएगी और आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। नई व्यवस्था के तहत किसी नवीन पेंशन प्रकरण को क्रियेटर, वेरीफायर और एप्रूवर के तीनों स्तरों से गुजरना होगा। प्रत्येक स्तर पर अधिकतम पांच-पांच कार्य दिवस निर्धारित किए गए हैं। इस तरह सामान्य नवीन पेंशन प्रकरण के लिए तीनों स्तरों पर कुल 15 कार्य दिवस की समय-सीमा तय है। वहीं पुनरीक्षित पेंशन और वेतन निर्धारण के मामलों में प्रक्रिया को और तेज किया गया है। पुनरीक्षित पेंशन प्रकरणों के लिए क्रियेटर को अधिकतम चार कार्य दिवस, जबकि वेरीफायर और एप्रूवर को तीन-तीन कार्य दिवस में कार्यवाही पूरी करनी होगी। यानी ऐसे प्रकरण के लिए कुल 10 कार्य दिवस की अधिकतम समय-सीमा निर्धारित की गई है।